www.faithbook.in

Faithbook®
ACTIVITIES BEYOND BOOK

10th APRIL 2022
Issue 19

BOOK 031

किंतु, परंतु,
लेकिन, यदि,
अगर, मगर, काश

कुछ कर नहीं करते,
गुजरने वाले
बहानों की तलाश
नहीं करते...

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

अनुपम वीतराग वाणी!!

प्रणाम,

अमृत को किसी ने पीया नहीं, फिर भी अमृत की मधुरता की बातें सब करते हैं। इस तरह से संपूर्णज्ञान की प्राप्ति इस पंचम आरे में किसी ने नहीं की है फिर भी उसे पाने की उम्मीद जरूर है। जब तक हम संपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं करते हैं तब तक उसकी ओर यात्रा जारी रखनी हैं।

यह यात्रा यानी श्रुतभक्ति। स्वाध्याय से हम श्रुत की भक्ति करते हैं और संपूर्णज्ञान (केवलज्ञान) के प्राप्ति की ओर एक कदम आगे बढ़ते हैं!

इस मास के Faithbook Knowledge Book के अंक का स्वाध्याय आपको केवलज्ञान जल्द से जल्द प्राप्त कराए यही शुभकामना।

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

अहिंसा से रक्षा और हिंसा से युद्ध 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

हमारे धर्म के नियम बहुत ही सख्त हैं, ऐसा क्यों? 04
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 13.0 09
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

'मेरे भ्रम का पोटला'। 14
प्रियम्

अथ श्री गोडी पार्श्वनाथजी की कथा 19
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

ज्ञान कैसे मिलेगा? 23
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

A Mind Peace is Heaven 25
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 17 27
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

अहिंसा से रक्षा और हिंसा से युद्ध

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

मानव जीवन का उद्देश्य तो अनाहारी पद प्राप्त करने का है। परन्तु यह तब तक नहीं हो सकता, जब तक अधिक अहिंसा का पालन हों। सात्त्विक जीवन जीने के लिए आहार में विवेक आवश्यक हैं। अन्नाहारी या शाकाहारी जीवन में करुणा है, दया का झरना है। जबकि मांसाहारी जीवन में कठोरता, क्रूरता और तामसी भाव की बढ़ोतरी है।

बमों की खोज पदार्थ विज्ञान में हुई है, तो अहिंसा की शोध आत्मज्ञान में हुई है। भौतिक प्रयोग-शाला में अणुशक्ति का प्रदर्शन हुआ है, तो आध्यात्मिक प्रयोगशाला में अहिंसा की अनंत शक्ति का दिग्दर्शन हुआ है।

भगवान महावीर ने कहा है कि - **"प्रत्येक प्राणी की आत्मा हमारे समान है। सभी को सुख प्रिय है, दुःख अप्रिय है। जीवन प्रिय है, मरण अप्रिय है। अतः हे आत्मन्! दयालु बन, इसी में तेरा कल्याण निहित है। खुद के समान सभी में आत्मा के दर्शन कर।"** जिनके पास ऐसी आँख है, ऐसी दृष्टी है, वह सच्चा मनुष्य है। दुनिया को लहु की धारा से रक्त नहीं करना हो तो हमें सही अर्थों में मानव बनना पडेगा। इसी में जीवमात्र के प्रति प्रेम, मैत्री और बंधुता प्रकट होगी।

किसी आदमी ने कहा - "इश्वर ने विश्व के प्राणियों को मनुष्य के लिए अर्जित किया है, मनुष्य सबसे बड़ा है, इसलिये मनुष्य किसी को भी खा सकता है।" तब एक सज्जन विचारक ने कहा - **"संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य बड़ा है। इसका अर्थ यह नहीं होता है, कि वह अपने से छोटे प्राणियों को खा जाए। बल्कि अपने से छोटे प्राणियों की रक्षा करे।"** वास्तव में यही उसका फर्ज और कर्तव्यपरायणता है। इससे वह मानव कहलाने के योग्य रहेगा, अन्यथा शैतान बनकर रह जाएगा।

शाकाहार मात्र प्रचार नहीं है, अपितु विवेक पूर्ण विचार है। चिंतन करने से मालूम होगा कि आहार का उद्देश्य शरीर को तंदुरुस्ती प्रदान करना है, और इस शरीर द्वारा सुन्दर विचार, सुन्दर भावना, सुन्दर कार्य करना है। हमारी तरह प्रत्येक चैतन्यवंत प्राणी सुख की अभिलाषा करता है और दुःख से दूर रहना चाहता है। तब ऐसे निर्दोष प्राणियों को मार-कर पेट भरने से मन में सद्विचार कैसे आ सकते हैं?

प्रसिद्ध चिंतक बर्नाड शॉ के सन्मान में एक भव्य भोज समारोह आयोजित किया गया था। भोज्य पदार्थ में मांसाहार था। बर्नाड शो ने भोजन आरम्भ नहीं किया, तब सभी ने आग्रह करते हुए कहा : "भोजन प्रारंभ कीजिए।'

बर्नाड शॉ अपने स्थान से उठ कर खडे हुए बोले "मेरा पेट कब्रिस्तान नहीं है, जो मरे हुए प्राणियों को दफनाऊँ?"

शाकाहार मात्र पेट भरने के लिए नहीं है, परन्तु पवित्रता, सात्विकता और चरित्र निर्माण के लिए भी आवश्यक है।

बम संहारक है और अहिंसा रक्षक। हम देख रहें हैं कि आज बड़े-बड़े राष्ट्र शस्त्रों से नहीं का संग्रह कर रहे हैं। यदि उनसे पूछें कि "शस्त्रों का संग्रह और सर्जन किसलिए कर रहे हैं?" तो वे कहेंगे "शान्ति के लिए, अहिंसा के लिए, युद्ध विराम के लिए,।" कितनी हास्यास्पद बात है। खून से सने कपड़े खून से धोये नहीं जा सकते है, बल्कि पानी से धोये जाते हैं। इसी प्रकार विश्व को शान्ति हिंसा शस्त्रों से नहीं, किन्तु अहिंसा से मिल सकती है।

आचरण के साथ साथ हमारी बुद्धि भी विपरीत हो गई है, इसका मूल कारण पेट है। जिसमें डाला गया आहार अहिंसक, निर्दोष और पवित्र नहीं है। हमारे महापुरुषों का अहिंसा धर्म का सिद्धांत हम भूलते जा रहे है।

विदेश से आनेवाले विचारवान शाकाहारी कहते है, कि 'उनके देश में धन है, समृद्धि है। पर बमों का डर है। हिंसा का भय है। मन में अशान्ति है। जिसे दूर करने के लिए अहिंसा के अतिरिक्त दूसरा श्रेष्ठ मार्ग नहीं है।' विश्व को अहिंसा का मार्ग बतानेवाले भगवान महावीर के मैत्री अभयदान के उपदेश को आचरण में लाने की आवश्यकता है। इसी से सर्वत्र सुख, शान्ति, सन्तोष, और सलामती प्राप्त होगी। अन्यथा हिंसा के नग्न तांडव, वैर-झेर या अहंकार से विश्व में युध्द, अशान्ति, दुःख और अराजकता ही सबको आज प्रतयक्ष है।

शाकाहार सिर्फ पेट पूर्ति के लिए नहीं है। अपितु इसका उद्देश्य रक्त की नदियाँ बन्द करना है, क्रूरता के संस्कार समाप्त करना है और दिल को प्रेम, वात्सल्य और करुणा से पल्लवित कर दयालु बनाना है।

आप एक सुन्दर फल को देखते है, तो आँखों में प्रेम उमड़ आता है, सूँघने पर सुरभि प्राप्त होती है, स्पर्श करने पर मुलायम प्रतीत होता है और जीभ को मनभावन लगता है। जबकि माँस के टुकड़े को देखते ही घृणा उत्पन्न होती है, गन्ध से नाक सिकुड़ जाती है, हाथ से छूने को भी मन नहीं करता है। तो फिर खाने की तो बात ही कहाँ? गंदी वस्तुएँ पेट में जाने से विचार भी खराब ही आते हैं। जब तक मांसाहार रहेगा, तब तक युद्ध विराम हो नहीं सकते। युद्ध के मूल में प्राणी हिंसा का ही भाव है। जो व्यक्ति प्राणियों के प्रति निष्ठुर है, वह मानव के प्रति क्रूर क्यों नहीं हो सकता है? आज मनुष्य

का शत्रु वनचर प्राणी नहीं, अपितु स्वयं मनुष्य ही है। आज खून-खराबा बढ़ गया है, क्योंकि हिंसा की भावना प्रबल हो चुकी है। क्रूरता को उत्तेजना देने वाली वस्तु पेट में जा गिरी है।

Vegetarianism is not a fanatic idea, but it is to avoid the world from war.

मनुष्य और पशुओं में क्रूरता की तुलना करें, तो कौन ज्यादा क्रूर मालूम पड़ेगा? पशुओं ने अधिक मानव संहार किया या मनुष्यों ने? आज के सम्पूर्ण कत्लखाने और विलास के साधनों का मूल्यांकन मनुष्य को जंगली पशु से भी अधिक क्रूर और निष्ठुर साबित करता है। युद्धों में तो मनुष्य का संहार अविराम चल रहा हैं।

अफ्रिका के जंगलों में मनुष्य को खा जाने वाले नरभक्षी मानवों को एक पादरी ने धर्म उपदेश दिया। उसके उपदेश का बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ। कितने ही जंगली मनुष्यों ने नरभक्षण करना छोड़ दिया। उस समय यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। पादरीने स्वाभाविक अपने प्रवचन में इस युद्ध का और इसमें हजारों मनुष्यों के मरने का जिक्र किया। यह सुनकर एक जंगली ने उनसे प्रश्न किया कि - "इतने सारे लोगों को वे मार रहें हैं तो उन्हें खायेंगे कब?" पादरी के प्रश्न करने वाले को समझाया कि यह युद्ध मानव माँस के लिये नहीं हो रहा है। तब उस आदमी ने दूसरा प्रश्न किया - "युद्ध में मनुष्य को मारकर खाते नहीं हैं, तो फिर मारते क्यों हैं?" इस प्रश्न का उस पादरी ने प्रत्युत्तर दिया, दुश्मनावट-वैर है।

पशुओं में भी एक विशाल वर्ग वनस्पति और घास पर ही जीवित है। जबकि आज मनुष्यों में क्रूरता के संस्कार गर्भपात तक पहुँच गए है और भविष्य में यह वृद्ध-पात (बुजुर्ग-हत्या) तक भी पहुँच जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वास्तव में यह अयोग्य आहार, विकार का तामसिक और द्वेष भावों से पूर्ण कितना विषैला परिणाम है?

हृदय की निष्ठुरता को दूर करने तथा दिल में वात्सल्य भाव प्रकट करने के लिए शुध्द आहार-विहार अत्यन्त आवश्यक हैं। करुणानिधान भगवान के समवसरण में जन्मजात एक-दूसरे के वैरी पशु, जैसे-सिंह और हिरण, बाघ और बकरी, बिल्ली और चूहा भी आपसी वैर भाव भूल जाते थे। यह भगवान में सिद्ध हो चुकी अहिंसा का प्रत्यक्ष प्रभाव था। **'अहिंसा तत् : सन्निधौ वैरत्यागः'**, अर्थात् अहिंसक व्यक्ति के पास जीव का वैर भाव शान्त हो जाता है।

आज विज्ञान द्वारा आविष्कृत Atom Bomb विश्व के संहार के लिए है। यदि हम में अहिंसा, दया, कोमलता के भाव रहेंगे तो युध्द का अन्त संभव है, वास्तविक शान्ति स्थापित हो सकती है। अन्यथा कठोरता और निष्ठुरता से विश्व का विनाश होने में क्षणभर नहीं लगता है। अत: शाकाहार श्रेष्ठ ए ग्रेड का आहार है।

शाकाहार श्रेष्ठ ए ग्रेड का आहार है।

हमारे धर्म के नियम बहुत ही सख्त हैं, ऐसा क्यों?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

प्रश्न :

महाराज साहेब! अनेक प्रश्नों का समाधान हो गया हैं। अब एक नया प्रश्न है कि, दुनिया में सैकड़ों धर्म हैं। हर एक धर्म में कुछ ना कुछ rules and regulations होते ही है। पर अन्य किसी भी धर्म की अपेक्षा हमारे धर्म के नियम बहुत ही सख्त हैं, ऐसा क्यों?

उत्तर :

इस प्रश्न का जवाब अनेक प्रकार से दिया जा सकता है।

1. मान लीजिए कि, आपको नौकरी पर लगना है। आपको दो स्थानों से ऑफर मिली है। पहली नौकरी में काम का बर्डन कम है, दूसरी सुविधाएँ अच्छी है। दूसरी नौकरी में काम का बोझ थोड़ा ज्यादा है। नई सुविधाओं के बजाय तकलीफें ज्यादा हैं। पर दूसरी नौकरी में सेठ को यदि काम पसंद आ जाए तो धीरे-धीरे वह आपको पार्टनर बनाने को तैयार है। अरे! क्रमशः आप भी सेठ बन सकते हैं, ऐसी पूरी संभावना है। तो आप कौन सी नौकरी पसंद करेंगे?

याद रखना चाहिए कि, **हमेशा सेवक ही बनाये रखने वाली नौकरी करने से सेठ बनाने वाली नौकरी में ज्यादा कठिनाई होती है।**

जॉर्ज बर्नाड शॉ सिर्फ 9 वर्ष की उम्र में नौकरी की तलाश में लंदन गए थे। वैसे तो वे book-worm यानि साहित्यरसिक जीव थे। दिन में काम करते थे और रात में लाइब्रेरी से पुस्तक लाकर पढ़ते थे। क्रमशः बहुत सारे धर्मों की फिलॉसफी से वाकिफ हो गए थे। जैनधर्म का साहित्य भी बहुत पढ़ा था, प्रभावित भी हुए, इसलिए मांसाहार छोड़कर पूरे शाकाहारी बन गये थे। एक बार किसी प्रसंग पर

उन्होंने मांसाहार के विषय में कहा था कि, मेरा पेट कोई पशुओं के शवों को रखने का कब्रिस्तान नहीं है।

नाट्यकार बनने के बाद उन्होंने बहुत प्रसिद्धि हासिल की थी। एक बार महात्मा गांधी के पुत्र देवदास गांधी के साथ उनकी मुलाकात हुई। तब उनका इस प्रकार वार्तालाप हुआ था:

गांधी :

मि. शॉ! आप पुनर्जन्म में मानते हैं?

शो :

हाँ, मैं पुनर्जन्म में मानता हूँ।

गांधी :

तो आप अगले जन्म में क्या बनना चाहते हैं?

शो :

मैं जैन बनना चाहता हूँ।

जवाब सुनकर देवदास गांधी को जरा सा झटका लगा। उन्होंने कहा, "पुनर्जन्म के सिद्धांत को जिस तरह जैन मानते हैं, उसी तरह हिंदू भी मानते ही हैं, हिंदूओं की संख्या से जैनों की संख्या मुश्किल से सौ वें भाग जितनी होगी। तो आप ऐसी छोटी कौम में पुनर्जन्म क्यों लेना चाहते हैं?

शो :

आपके हिंदू धर्म में भगवान बनने के sole-rights, ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि को दिए जा चुके हैं। कोई उनकी चाहे जितनी भी भक्ति कर ले, पर उस भक्ति से स्वयं ब्रह्मा इत्यादि नहीं बना जा सकता। उसको तो हमेशा के लिए सेवक और भक्त ही बने रहना होता है।

जबकि जैन धर्म में तो अरिहंत के ध्यान से अरिहंत बन सकते हैं। कहा जाता है कि अनंत अरिहंत परमात्मा बन चुके हैं, और भविष्य में अनंत बनने वाले हैं। तो जो धर्म मुझे खुद को भगवान बना दे ऐसा ही धर्म क्यों न चाहूँ?

बात ऐसी है कि, सिर्फ यह धर्म सिर्फ भक्त ही बने रहने का नहीं है, स्वयं भगवान बन सको ऐसा हमारा जैन धर्म है। सेठ बनाने वाली नौकरी में कठिनाइयाँ तो होगी ही ना?

2. बाकी हकीकत यह है कि, कोई भी चीज शुरु-शुरु में कठिन लगती है। नई शुरुआत करनी ही कठिन लग सकती है। फिर भी आप दृढ़ता से पकड़ रखेंगे तो वह एकदम सहज बन जाती है।

जो आज Chain Smoker है, उससे पूछना कि जब जिंदगी में पहली बार सिगरेट का कस लिया था, तब क्या अनुभव हुआ था वह आपको बता-येगा:

धुआं अंदर घूम रहा था, बहुत ही घुटन महसूस होती थी।

तो फिर वह chain smoker कैसे बन गया? घुटन होने पर भी सिगरेट पीना उसने चालू ही रखा,

चालू ही रखा, इसलिए व्यसन लग गया। अब सिगरेट के बिना चलता ही नहीं।

इसी तरह से जिन्होंने आज तक कंदमूल खाए हैं, उनको अब उसका त्याग करने में प्रारंभ में थोड़ी सी कठिनाइयाँ लगेगी। पर फिर भी उस त्याग में वह यदि दृढ़ रहेगा, तो कंदमूल त्याग सहज बन जाएगा। फिर उसमें कोई भी दिक्कत नहीं रहेगी।

आज भी ऐसे हजारों श्रावक हैं, जो बाहर जाते हैं, कंदमूल रहित भोजन का प्रबंध नहीं हो पाता है, तो घर से लेकर गये हुए थेपले आदि से या केवल दूध-केले आदि से गुजारा कर लेते हैं। और वह भी खुमारी और सहजता से, लाचारी से या जबरदस्ती से नहीं।

अरे! USA आदि परदेश में भी ऐसे सैकड़ों नरवीर आज भी मौजूद हैं।

ऐसा ही रात्रि भोजन त्याग आदि के लिए समझें।

और जिन्होंने जन्म से ही कंदमूल आदि का भक्षण नहीं किया है, उनके लिए तो यह त्याग बिल्कुल सहज होता है।

'म. सा.! ये सारी बातें सच हैं, पर हमें तो कंदमूल या रात्रिभोजन का त्याग बहुत अधिक कठिन लगता है।'

यह तो आप दृढ़ संकल्पपूर्वक, उत्साह के साथ जब तक त्याग को प्रधानता देकर आगे नहीं बढ़ेंगे तब तक कठिन ही लगने वाला है। पर इस प्रकार से आगे बढ़ना चालू कर देंगे, और प्रारंभ में लग रही कठिनाइयों को Ignore करते रहेंगे तो धीरे-धीरे कठिनाइयाँ दूर होने लगेगी। और सहजता आ जाएगी।

जिनको Diabetes Diagnose हुआ हो ऐसे पेशन्टस को प्रारंभ में मिठाई त्याग, चाय भी फीकी पीना आदि सब कितना कठिन लगता है। पर इस त्याग को दृढ़ता से बनाये रखते हैं, तो फिर वे सब भी आराम से जीते ही है ना!

Practice makes a man perfect.

'महाराज साहेब! आपको जो कहना हो वह कहो, पर हमें तो असंभव जैसा या अतिदुष्कर लगता ही है!'

अरे! भाग्यशाली! कोरोना महामारी में आए लॉक-डाउन से पहले,

1. रात को 9:00 बजे ऑफिस से आने के बाद भी एक चक्कर बाहर लगाए बिना नहीं रह सकने वालों को भी चौबीसों घंटे घर में पैक रहना क्या असंभव नहीं लगता था?

2. रात को काम वाली नहीं आई हो तो आखिर में बिना धोए के बर्तन पूरी रात भर बासी पड़े रहने देने वाली महिलाओं के लिए घर में कचरा, पोता, कपड़े धोना, बर्तन मांजना यह सब कुछ क्यां असंभव नहीं था?

3. धंधे में अपार रुचि रखने वाले व्यापारियों के लिए अच्छा आरोग्य होने पर भी बिना कमाई के घर पर बैठे रहना क्या असंभव नहीं था?

4. जिनकी रविवार की शाम तो किसी होटल या रिसोर्ट आदि में ही बीतती थी, ऐसे शौकीनों के लिए बिना किसी बीमारी के पिछले कईं दिनों से घर में घुटकर बैठे रहना, यह क्या असंभव नहीं था?

5. या तो किसी सहेली के यहाँ, या किसी मंडल में, या किसी पार्टी में, या किसी शॉपिंग मॉल में; इस तरह से रोज कहीं ना कहीं पर जाने के लिए घर से बाहर निकलने वाली सन्नारियों के लिए डेढ़-दो महीना कहीं पर भी नहीं जाना, क्या यह असंभव नहीं था?

6. क्रिकेट शौकीनों के लिए क्रिकेट छोड़ना क्या असंभव नहीं था?

7. रोज एक घंटा जोगिंग करने वालों को घर ही हवा ही खाते रहना पड़ा, क्या यह असंभव नहीं था?

8. लारी-गल्ले पर खड़े रहने वालों के लिए लारी-गल्ले को छोड़ना क्या असंभव नहीं था?

ये सभी Impossibles क्या Possibles नहीं बन गए? प्रारंभ में थोड़े difficult लगते थे, पर बाद में क्या Easy नहीं बन गये थे? बन ही गये थे, वरना तो लॉकडाउन उत्तरोत्तर बढ़ाए जाने पर प्रजा त्रस्त हो जाती, और अपने त्रास को दंगे, तूफान, चोरी, लूटमार आदि हंगामा करके व्यक्त भी कर देती। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यह दर्शाता है कि सबको इन सब की आदत पड़ गई थी।

तो याद रखना कि, **Nothing is impossible, Nothing is difficult.**

'पर महाराज साहेब कोरोना का त्रास और अ-सहाय लाचारीपूर्ण मौत - ये सभी आतंक नजर के सामने थे, इसलिए उसके डर के कारण से यह सब संभव हो गया और सहज भी बन गया।'

आपकी बात सच है। डर असंभव को भी संभव बना देता है।

राजकुमार बिस्मार्क अपने 3-4 मित्रों के साथ कहीं घूमने गया था। सबसे आगे चलने वाले मित्र का पैर ऐसे स्थान पर पड़ा जहाँ बहुत अधिक कीचड़ था। वह कीचड़ में धंसने लगा। बाहर आने के लिए जैसे-जैसे जोर लगाता गया, वैसे-वैसे और ज्यादा धंसने लगा। राजकुमार ने सारी परिस्थिति को समझ लिया। उसने अपनी राइफल निकाली और बराबर उस मित्र की ओर तानी। उंगली ट्रिगर पर रखकर उस मित्र को कहा, 'दोस्त तू भगवान को

याद कर ले, तू इस तरह से बेमौत मारा जाए, यह मैं नहीं देख सकूंगा, उससे अच्छा है कि मैं तुझे गोली मारकर ही खत्म कर देता हूँ।'

और उस मित्र ने ऐसा जोर लगाया कि वह सीधे कीचड़ के बाहर आ गया। हाँ! गोली से मर जाने का जो डर पैदा हुआ उसने यह शक्ति पैदा कर दी थी।

हम डेढ़ या दो साल पहले कोरोना का 'क' भी नहीं जानते थे। हमें खुद को तो कोरोना का कुछ भी अनुभव नहीं हुआ, पर फिर भी सरकार और मीडिया जो कुछ कह रहे हैं उसी के आधार पर हमें यह डर पैदा हुआ है ना?

तो फिर प्रभु के वचन (शास्त्रों) और गुरु भगवंत के व्याख्यान हमें कंदमूल भक्षण आदि के दुर्गति-गमनादि दुष्प्रभाव बताते हैं, उसके आधार से हमें डर पैदा नहीं होगा?

यदि हम जंगल में गुमराह हो जाएँ, और सबको जोर से भूख लगी हो। एक वृक्ष पर सुंदर फल दिख गए हों और 2-4 फल तोड़कर खाने की तैयारी ही कर रहे हों कि, जंगल का कोई आदिवासी हमें खाने से रोके और कहे कि, 'सेठजी खाना मत, जहरीला फल है!'

तो क्या हम उसे खाएँगे? या भूख सहन करना पसंद करेंगे?

कोई अतिमहत्त्व के काम से सुबह 5:00 बजे निकलना है। ड्राइवर को सुबह 4:30 बजे आकर गाड़ी तैयार करके गेराज से बाहर निकालने की सूचना दी गई है। तदनुसार उसने बाहर निकाल कर हमारे सामने खड़ी कर दी है। हम बैठ गए। ड्राइवर Car Start करे, इतने में हमारे घर का नौकर दौड़ता-दौड़ता हुआ आए और हाँफते-हाँफते कहे कि, 'सेठजी पिछली रात को मुझे सपना आया था कि आप कार में निकले, थोड़े ही आगे गए और एक खतरनाक एक्सीडेंट हो गया। कोई भी नहीं बचा। सेठजी कार में मत जाना।'

हम जाएँगे? या महत्त्व के काम को भी टाल देंगे?

हमको बिल्कुल अपरिचित भील का वचन भी डर पैदा कर सकता है। नौकर का स्वप्न भी डर पैदा कर सकता है। लेकिन प्रभु के वचन नहीं?

अधिक आगामी लेख में...

Everything is Online, We are Offline 13.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

गत लेख में हमने ग्रेफाईन के बारे में कुछ जानकारियाँ दी थी। इस लेख में हम विस्तार से उन 8 प्रश्नों के उत्तर देना चाहेंगे, जो प्रश्न गत लेख में हमने पाठकों के सामने रखे थे।

1. विश्व के बादशाह बनने की इच्छा रखने वाले कुछ परिवारों को, विश्व को गुलाम बनाने में रस है या विश्व के लोगों को मार डालने में?

समाधान :

इसका उत्तर है कि, दोनों में। इसका रास्ता है ग्रेफाईन इत्यादि केमिकल्स या भौतिक द्रव्य...।

ग्रेफीन या ग्रेफाईन को हम शोर्ट में (GR) के रूप में समझेंगे। उससे क्या-क्या नुकसान होते है, वह देखना जरूरी है। यहां पहले अंग्रेजी में दे रहे है फिर उनका संक्षिप्त अनुवाद भी देंगे।

This is how GR Reacts When Exposed to Electro Magnetic discharges.

This Nanomaterial Has a High Super conducting Condonsation Energy Density.

GR Oxidizes Rapidly When Exposed to Electromagnetic Fields,

The Human Body Has its own Electromagnetic Fields.

The Main ones are those of the Abdomen, Heart & Head.

5G Electro frequencies cause GR to Behave Aggressively in the Body.

When GR is Excited by these Fields. It Becomes Thrombogenic and it Also Kills Neurons, cousing Neurological Complications.

The Body's Functioning is completely Affected, creating Serious Health com -plications.

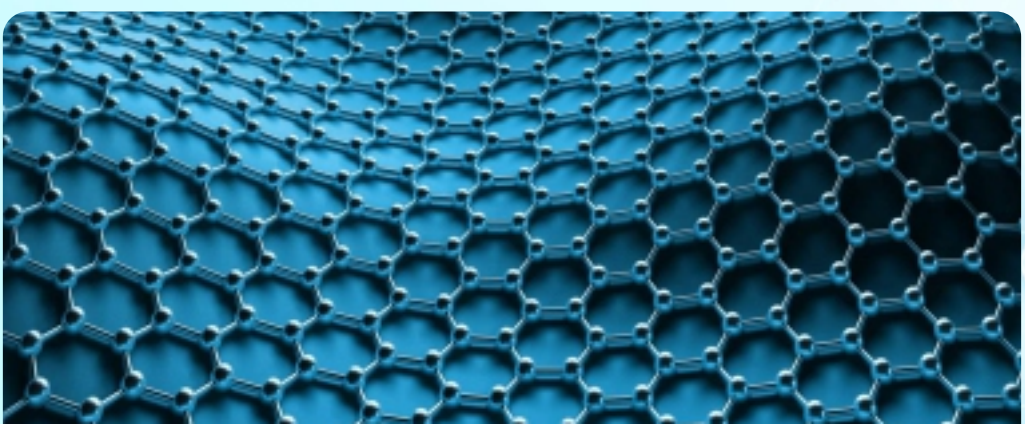

GR Has been found in Vaccines, Physiological Saline, Masks, PCR swabs, Among other Protection Elements, & it makes People Pscudo-Magnetic.

There are Hundreds of Studies Describing the Toxicity of GR in living Beings.

Researchers From La Quinta Columna are doing Their Best to Raise Awareness of the Dangers of Products of Medical use containing GR.

For More info. in English

Visit https//www.orwell. city

Lindsey bornhoeft-Graduate students at Texas. A and M University...

बहुत ही मार्मिक बातें GR के बारे में... [संक्षिप्त में, शोध के आधार पर]

अंग्रेजी में लिखें महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का हिन्दी रूपांतरण आप यहाँ पढ़ रहे हैं।

तब GR (यानि ग्रेफाईन) कैसी प्रतिक्रिया देता है, जब विद्युत चुंबकीय विकरणों का स्खलन होता है? GR एक ऐसा सूक्ष्म द्रव्य है, जो ऊर्जा की घनता को स्वयं ग्रहण कर लेता है और फिर जमता है। जब GR को विद्युत चुंबकीय क्षेत्र के पास एक्सपोज़ किया जाता है तब उसमें ओक्सीडेसन होता है।

- इन्सान के शरीर में अपना ही एक विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र है।
- इन्सान के शरीर के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में मुख्य तीन हिस्से ऐसे है, जो बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, जिसमें से एक मस्तिष्क है, दूसरा हृदय है और तीसरा नाभि के नीचे का हिस्सा है।

- 5G इलेक्ट्रो तीव्रता GR को शरीर के अंदर उग्रता से प्रतिक्रिया करवाती है और जब GR विद्युत चुंबकीय विकिरणों से प्रभावित होता है तब शरीर के अंदर बह रहे खून को जमाने का शुरु कर देता है, साथ ही साथ न्यूरोन्स (दिमाग को सक्रिय रखने वाले महत्त्वपूर्ण तत्त्व) को मारने लगता है, जिससे दिमागी समस्याएँ पैदा होने लगती है।
- तत्पश्चात् शारीरिक गतिविधियाँ संपूर्ण रुप से प्रभावित और अवरुद्ध होने लगती है, जो कि गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं निर्मित करती है।
- GR कहाँ-कहाँ पाया जाता है?

वैक्सीन में, फीज़ियोलोजिकल सेलाईन में, मास्क में, RTPCR टेस्टिंग के लिए जो साधन उपयुक्त होते हैं उसमें, अन्य भी अनेक चिकित्सकीय सुरक्षा साधनों में।

- GR का कार्य क्या है?

GR इन्सानों के शरीरों को छद्म चुंबकीय बना रहा है [यहाँ पर छद्म चुंबकीय का अर्थ सरल भाषा में समझना हो तो, इन्सान अंदर से चुंबकीय बनता जाता है, लेकिन उसे स्वयं को ही इसका पता नहीं चल पाता है।]

- हजारों शोध साफ-साफ बता रहे है कि, जीवित प्राणियों में GR की ज़हरीली असर हो रही है।

- ला क्वीन्टा कोलमना के संशोधक मेडिकल उत्पादों में जो GR का उपयोग हो रहा है, उसके खतरे बताने के लिए जागरूकता फैलाने का श्रेष्ठकार्य कर रहे है। ज्यादा जानकारी पाने के लिए A&M विश्वविद्यालय - टेक्सास (अमेरिका) के ग्रेजुएट स्टूडेण्ट लींडसे का संपर्क कर सकते हैं।

प्रथम प्रश्न का उत्तर ध्यान से पढ़ना...

विश्व में एक गुप्त संस्था को समर्थन देने हेतु, एक प्रसिद्ध सोसायटी ने उससे कुछ अनुबंध किया और फिर उस गुप्त संस्था के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु कमर कस ली।

उन लोगों का मानना हैं कि, इस विश्व के संचालक हम है, कोई ईश्वर या कुदरत नहीं। विश्व संचालन हेतु उन लोगों की मानसिकता ऐसी है कि, इस विश्व में प्राकृतिक संपदाओं को भोगने वाले सीमित संख्या में होने चाहिए, अनियंत्रित संख्या में नहीं।

यदि संख्या बढ़ती है तो ऐसे लोगों की ही बढ़े, जो मजबूत रोग प्रतिरोधी क्षमता से सक्षम हो। निर्बल, कमजोर और खाने वाले फालतु लोगों को तो जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है, अत: हमें ऐसी कोई चीज बनानी चाहिए, जो लेने वाले यदि कमजोर प्रकृति के हो तो खत्म हो और यदि मजबूत हो तो टिके भी रहे , साथ में हमारे नियंत्रण में भी रहे। इस कार्यक्रम को अंग्रेजी में 'ब्रीड अपग्रेडशन' कहा जाता है।

जो पेड़ तूफानी हवा में टिक जाये, उसे मजबूत माना जाता है। जो ऐसे (GR जैसे) खतरनाक द्रव्य को भी हजम कर जाये, उसे मजबूत माना जाये। GR शरीर में घुसा देने पर उनके दोनों उद्देश्य सिद्ध हो सकते हैं। 1. गुलाम बनाने का, 2. या मार डालने का।

हालांकि, उन्हें भी बराबर पता है कि GR कितना ज्यादा खतरनाक है, इसलिए वे स्वयं के शरोर में कभी GR को घूसाने के दुष्प्रयोग नहीं करते हैं, ना ही अपने प्रिय-परिचितों के शरीर में घुसाने का...

चुनाव कौन जीतता है? चुनाव में सेकण्ड रनर अप (विजेता के बाद में रहे पायदान पर) कौन आता है? और चुनाव में कौन पराजित होता है? इन तीनों सवालों के उत्तर में वैश्विक षड़यंत्र का राज़ छिपा है

जैसे कि चुनाव यदि संपूर्ण रूप से निष्पक्ष कराया जाये तो, चुनाव में सर्वप्रथम विजेता, लोगों के दिलों पर राज करने वाला प्रिय व्यक्ति बनता है। दूसरे पायदान पर वो आता है, जिसने प्रचार-प्रसार के माध्यम से लागों की कृत्रिम प्रियता हासिल की है, तीसरे पायदान पर यानि पराजय की जूते की माला उसे पहननी पड़ती है, जो प्रिय भी नहीं है और जिसका प्रचार-प्रसार (पैसा) ना होने से जिसे कोई जानता भी नहीं है।

1. कुदरती (प्राकृतिक) प्रियता
2. कृत्रिम (अप्राकृतिक) प्रियता

इन दोनों को कहीं ना कहीं पर स्थान मिलता है। एक पक्ष में रहता है तो दूसरा विपक्ष में बैठता है लेकिन, बेचारा पराजित व्यक्ति कहीं का नहीं रहता है, ठीक उसी प्रकार अपने शरीर में दो प्रकार

की रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है।

1. प्राकृतिक, 2. अप्राकृतिक...

जो लोग विभिन्न दवाईयों के माध्यम से अपने शरीर को सुरक्षित रखना चाहते है वे लोग अप्राकृतिक सुरक्षा पाने वालों में से है और

जो लोग सिर्फ सूर्य प्रकाश, जल, अन्न, खान, पान इत्यादि से ही अपने शरीर की सुरक्षा करना जानते हैं, वे लोग प्राकृतिक सुरक्षा पाते हैं।

वैक्सीन, मास्क, टेस्टिंग किट्स, विभिन्न मेडिकल उपकरणों के माध्यम से जब GR शरीर के अंदर प्रवेश करता है तब शरीर इनसे लड़ने में ही उलझा रहता है [शायद इसीलिए 'एन्टीबॉडी' का उसे नाम दिया गया है, मुझे तो आज तक पता नहीं चल पाया है कि लोग इसके सामान्य अर्थ पर भी क्यों प्रश्न नहीं करते हैं? एन्टी का अर्थ है विरोधी-दुश्मन और बॉडी का अर्थ है शरीर... जो शरीर का विरोधी है, वो एन्टीबॉडी]

लड़ाई सीमित हो, तब तो हम मजबूत होते है, लेकिन अपनी क्षमता से जब अधिक बलवान शत्रु हो तब मृत्यु हो जाती है। वह बात सच्ची है कि, रोज युद्धाभ्यास करने वाला मजबूत बनता है और अचानक युद्ध आने पर अभ्यास नहीं करने वाला कमजोर होता है, लेकिन याद रहें, युद्ध का अभ्यास हो तो मजबूती मिलती है, साक्षात् युद्ध में तो मृत्यु भी हो सकती है। विजय मिलता भी है तो भी बर्बादी के निशान छोड़कर...

ग्रेफीन (GR) शरीर में प्रवेश करने के बाद बहुत सारी तोड़-फोड़ कर सकता है और करता भी है। आप लेख की शुरुआत में दिया गया अंग्रेजी का हिंदी अनुवाद फिर से पढ़े। तीसरे प्रश्न का जवाब भी उसी में है। (प्रश्न नं. 3 टीके लेने वालों में हार्ट अटैक या ब्रैन स्ट्रोक के किस्से अत्यधिक सुनने में आ रहे है, क्या ऐसी कोई चीज टीके में है,

जो जानलेवा है? जी हाँ, ऐसी चौज है, जिसका नाम है GR

एक ही डिस्ट्रिक्ट में, सिर्फ 20 दिन में ही, हार्ट फेल से (अटैक नहीं, फेल से) मरने वाले 1000 लोगों के जब सच्चे समाचार सुनते हैं तो हार्ट की धड़कने तेज हो जाती है, कहीं अपना नंबर न लग जाये?

सचमुच, 30 साल, 35 साल, 40 साल के नौ-जवान, जिसे नाखून में भी रोग ना हो, उसे मृत्यु तक के नुकसान हो, वो बड़ा ही दर्दनाक है।

चौंथे प्रश्न का उत्तर भी यही है कि, सभी लोगों को यह समस्या क्यों नहीं हो रही? इसलिए नहीं हो रहीं हैं, क्योंकि

1. सभी की रोग प्रतिरोधी क्षमता समान नहीं है।

2. भारत में सूर्यप्रकाश, भूजल एवं विभिन्न मसालों से इम्युनिटी स्ट्रांग है।

3. भारत में अभी-अभी Mass Vaccination की शुरुआत हुई है, अत: रोगप्रतिरोधी क्षमता प्राकृ-तिक रूप से अच्छी है।

4. कई सारे डोज़ में सिर्फ ग्लुकोज़ या सादा पानी ही है। (प्लेसिबो)

5. कई सारे लोग फर्जी सर्टिफिकेट बनाकर घूम रहे हैं, अत: लोगों में भ्रम फैल रहा है कि टीका इत्यादि लेने वालों को कुछ भी नहों हो रहा।

6. कई बार ज़हर भी कई लोगों के लिए कम मात्रा में हो तो दवाई का कार्य कर सकता है (लेकिन बहुत ही कम लोगों के लिए ही) क्योंकि द्रव्यों के परिणाम विचित्र होते हैं, ऐसा शास्त्रों में लिखा है।

7. अभी GR शरीर में मौजुद होने पर भी जो प्रभावित नहीं हुआ, बाद में उन्हें 5G नेटवर्क शुरु होने के बाद गंभीर नुकसान हो सकते है।

8 . कई सारे लोगों के मारे जाने के आपके पास समाचार मीडिया के माध्यम से प्रकाशित नहीं हो पाने से भी आपको इसका पता नहीं लग पाता हो।

और भी ऐसे अनेक कारण हैं, जिसके कारण ग्रेफीन (GR) का बूरा असर सभी लोगों को अभी नहों हो रहा है।

पाँचवे प्रश्न का उत्तर ये है कि, GR एक बार अंदर (कुछ मात्रा में) चला गया तो आप 5G नेटवर्क से शिकार किये जा सकते हो और इसके ऑफिश्यल प्रयोग हो चुके हैं।

पर्टीक्यूलर (विवक्षित+निश्चित) स्थान में रहे पर्टी-क्यूलर (निश्चित) व्यक्ति को यदि टपकाना हो तो GR-5G का समन्वय बहुत उपयुक्त है।

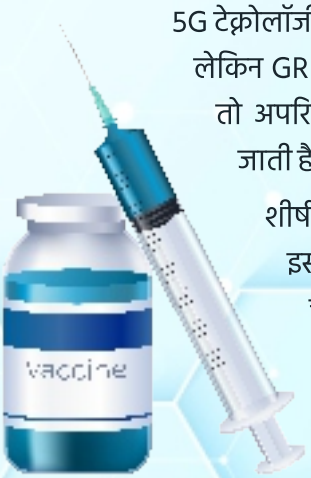

5G टेक्नोलॉजी वैसे भी खतरनाक है, लेकिन GR बॉडी में जाने के बाद तो अपरिमित शक्तिशाली बन जाती है।

शीर्ष स्थानों के हाथों में इसकी चाबीं है कि, कब चौथी लहर शुरु करनी और कब 5वीं...

फर्जी खबरों से भी फर्जी लहर शुरु कर सकते है, ये लोग। मीडिया के द्वारा लहर आये वो फर्जी लहर होती है। 5G-GR के माध्यम से लहर आये वो असली होती है।

प्रश्न दो का उत्तर... भी बहुत हद तक GR को ही उजागर करती है और शोध को देखेंगे तो यह बात शत-प्रतिशत सच्ची है।

आप जानकर आश्चर्य करेंगे कि, ओस्ट्रिया के एक वैज्ञानिक ने जैसे ही GR के बारे में अपना वक्तव्य देना शुरु किया। आधे वक्तव्य में पुलिस आ कर ले गई और लाईव प्रसारण हो गया। 10 दिन के बाद उस वैज्ञानिक का कस्टोडियल डेथ हो चुका था।

कस्टोडियल डेथ यानि पुलिस की हिरासत में पुलिस के द्वारा की गई ज्यादती से मृत्यु (नहीं मर्डर...)

उस वैज्ञानिक ने ऐसा तो क्या कह दिया था कि उसकी बोलती हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देने की नौबत आ गई।

जानते हैं अगले अंक में

[उन वैज्ञानिक की बातों से पता चलता है कि, GR अंदर जाकर क्या-क्या नुकसान करता है, आपको इसे जानना इसलिए भी आवश्यक हैं, क्योंकि उसी में आपके 6-7-8 प्रश्नों का उत्तर छिपा हुआ हैं और एक बात खास ध्यान में रखने जैसी है कि, सिर्फ वैक्सोन ही नहीं, अनेक चीज़ों में अब तो ग्रेफाइन आ रहा है या आने वाला है, कौन-कौनसी वह चीज़ है? जो 5G-GR के गठजोड़ को सहकार दे सकती है। जानेंगे अगले अंक में...]

इस लेख के अनुसंधान के लिए यदि आपको पूर्व का आलेख पढ़ना हो तो अवश्य संपर्क करें : 91665 68636

'मेरे भ्रम का पोटला'।

प्रियम्

घर अपने वालम कहो रे, कौण वस्तु नी खोट?

यदि आपको अपने घर में सोना ही सोना दिखाई दे, और दुनियाभर में धूल ही धूल दिखाई दे, तब समझ लेना कि अब आपको सत्य दिखाई देने लगा है।

रोज के अरबों की कमाई करने वाले उद्योगपति, और चौपाटी की रेत को जेब में भरने वाला बालक – इन दोनों के बीच कोई भी फर्क ना लगे, तब समझ लेना कि अब आपको सत्य दिखाई देने लगा है।

मेगा मॉल, मेगा ज्वेलरी शो-रूम और चौपाटी – ये सभी जब समानार्थी दिखने लगें, तब समझना कि अब आप समझदार हो गए हैं।

रूपवान नवयौवना स्त्री, और रेत की ढेरी – ये दोनों परस्पर एक-दूसरे का प्रतिबिंब लगे, तब समझ लेना चाहिए कि अब हम शब्दों के अर्थ को बराबर से समझने लगे हैं।

हार-मालाएँ पहनने के लिए हो रही धक्कामुक्की, और धूल के उड़ते गुबार – ये दोनों जब हमें एक ही पात्र के डबल-रोल लगने लगे, तब हमने अंशत तत्त्व की स्पर्शना होती है।

बहुत ही मूल्यवान वस्त्राभूषण पहना हुआ व्यक्ति, और धूल से लिपटा हुआ

GHAR APNE VALAM KAHO RE...

व्यक्ति – ये दोनों जब हमें एक समान लगने लगें तब हमने उन व्यक्तियों को सही मायने में पहचान लिया होता है।

हमें लगता है कि इन सभी परिणतियों में व्यवहार का छेद उड़ जायेगा, पर हकीकत यह है कि ये सभी परिणतियाँ होगी, तो ही सही व्यवहार हो पायेगा। सभी बाह्य प्रवृत्तियों को सहज और सुंदर बनाने वाला यदि कोई तत्त्व है, तो वह यह परिणति है।

आपको संघ-शासन के काम करने हो, तो भी आपको इस परिणति की आवश्यकता पड़ेगी। आपको "VIP" को मिलना होगा, तो भी आपको इस परिणति की जरूरत होगी। आपके बोलने से पहले आपकी उपस्थिति बोलने लगे तभी आपके बोलने का मतलब रहता है। आपकी उपस्थिति यदि उभर कर नहीं आती, तो आप कुछ भी नहीं हैं। मुखर अस्तित्व ही जीवित अस्तित्व है, मौन अस्तित्व तो मृत्यु का अस्तित्व है। अस्तित्व की मुखरता, आँखों की गहनता और आकार की सौम्यता – ये परिणति का परिपूर्ण प्रमाण पत्र है।

आपकी माता ने हकीकत में रो-मटीरियल को जन्म दिया होता है। जिसमें से आपको आपका सृजन करना होता है। आपको तो आप खुद ही जन्म दे सकते हैं। दूसरे शब्दों में, आपके पुरुषार्थ से प्रगट हुई परिणति ही आपको जन्म दे सकती है। तीसरे शब्दों में, आपकी परिणति का जन्म ही आपका जन्म है। चौथे शब्दों में, यदि आपकी परिणति नहीं है, तो आप भी नहीं हैं। पाँचवें शब्दों में, परिणति का सृजन – माता के सृजन की सार्थकता है।

बाहर के सारे काम करने से पहले यह अंदर का काम करने जैसा है। बाहर के सृजन से पहले यह भीतरी सृजन जरूरी है। यदि आप ही नहीं हो, तो आप का किया हुआ कृत्य भी नहीं है। स्वकृत, स्व के सापेक्ष होता है। यदि स्व ही नहीं है, तो स्वकृत का अर्थ और वन्ध्यापुत्र का अर्थ एक ही बन जाता है।

अधिक गहराई में जायेंगे तो स्व ही सर्वश्रेष्ठ स्वकृत है। पर का कर्तृत्व – मोह है, कर्मबंध का कारण है। याद आता है सवा सौ गाथा का स्तवन:

हुं कर्ता परभावनो, एम जिम जिम जाणे;
तिम तिम अज्ञानी पड़े, निज कर्म के थाणे।

हुं कर्ता परभावनो,
एम जिम जिम जाणे;
तिम तिम अज्ञानी पड़े,
निज कर्म के थाणे।

तीर्थंकर क्या करते हैं? दीक्षा लेकर एक ही साधना में लग जाते है। 'स्व' के सृजन सर्जन की। प्राय: मौन, शून्य प्रवचन। पूर्ण अंतर्मुखता सीधे केवलज्ञान के प्राकट्य तक। फिर? बाह्य प्रवृत्ति? बाह्य सृजन? नहीं, केवल सहज परार्थ। याद आता है तत्त्वार्थभाष्य :

तत्स्वाभाव्यादेव प्रकाशयति भास्करो यथा लोकम्।
तीर्थप्रवर्तनाय प्रवर्तते तीर्थकृदेवम्॥

जिस तरह सूर्य स्वभाव से ही विश्व को उज्ज्वलित करता है, उसी तरह तीर्थंकर स्वभाव से ही तीर्थप्रवर्तन के लिए प्रवृत्ति करते हैं।

तीर्थंकरकल्प : तीर्थंकरों का आचार यह है कि, केवलज्ञान तक मौन, उसके बाद सहज परार्थ।

स्थविरकल्प यह है कि, गीतार्थता तक मौन रखना, उसके बाद सहज जैसा परार्थ। प्रधानता स्व की, लक्ष्य स्व का। पर ज्यादा से ज्यादा अनुषांगिक। वह भी स्व को गौण करके नहीं, स्व के लिये ही। इसी का नाम मोक्षमार्ग है। याद आता है आवश्यकनिर्युक्ति :

तं च कहं वेइज्जइ अगिलाए धम्मदेसणाइं हिं।

तीर्थंकर नाम कर्म की निर्जरा किस तरह से होती है? बिना थके धर्मदेशना आदि परार्थ करने से।

गौतमस्वामी, शालिभद्र, अभयकुमार आदि का प्रभु ने निस्तार किया। गौतमस्वामी आदि की अपेक्षा से परार्थ था। प्रभु की अपनी अपेक्षा से स्वार्थ था। प्रभु की प्रत्येक परार्थ प्रवृत्ति उनकी आत्मा को मोक्ष की दिशा में सघन गति अर्पण कर रही थी।

बात है स्व की। स्व को देखना, स्व को पहचानना, स्व में सर्वस्व हो जाना, स्व में सर्व-समावेश को देखना और उसके द्वारा 'पर' से सहज उदासीनता को आत्मसात् करना। याद आता है, नियमसारवृत्ति :

क्षीणे मोहे तृणमिव सदा लोकमालोकयामः।

शीश भरम की पोट

मोह पिघल गया, और पूरी दुनिया घास-तृण के समान दिखने लगी। घास, मात्र घास।

घर अपने वालम कहो रे, कौण वस्तुनी खोट?

अभयकुमार दीक्षा ले, या ना ले, भगवान को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। अभयकुमार के दीक्षा लेने से भगवान के घर में कुछ बढ़ने वाला नहीं था, और वह शायद दीक्षा ना ले, तो भगवान के घर से कुछ भी कम नहीं होने वाला था। हाँ, भगवान की औचित्यप्रवृत्ति से उनका कर्मक्षय अवश्य होने वाला था। पर प्रभु को उसमें परिणाम का कोई भी औत्सुक्य नहीं था, हर्ष-शोक नहीं था। क्योंकि अपने उपदेश से बाहर क्या असर हुई, उसका क्या परिणाम आया, प्रभु की दृष्टि इस ओर थी ही नहीं। प्रभु का यह उद्देश्य था ही नहीं। प्रभु समझते थे कि यह परिणाम उनका परिणाम था ही नहीं, वह परिणाम तो अभयकुमार का परिणाम था।

याद आता है अध्यात्मसार :

पराश्रितानां भावानां कर्तृत्वाद्यभिमानतः।
कर्मणा बध्यतेऽज्ञानी, ज्ञानवाँस्तु न लिप्यते ॥

जो वस्तु 'पर' आश्रित है, उसका कर्तृत्व खुद में मानना, यह मिथ्या-भिमान के सिवा और कुछ भी नहीं है। उससे अज्ञानी कर्म से बँध जाता है, ज्ञानी ऐसे कर्तृत्व भाव में लिप्त नहीं रहते।

फोगट तद किम कीजिये प्यारे, शीश भरम की पोट

भ्रम का पोटला ही तो मिथ्याभिमान है न? गलत मान्यता रखना मिथ्याभिमान है। बारदाने को सिंहासन मानना मिथ्याभिमान है। बाह्य स्थिति में सुख मानना मिथ्याभिमान है। परभावों का कर्तृत्व खुद में मानना मिथ्याभिमान है।

छगन ने रास्ते में एक इलेक्ट्रिक के खंभे पर एक नया बोर्ड देखा। बोर्ड पर क्या लिखा था, वह ठीक से पढ़ा नहीं जा रहाँ था। छगन खंभे के ऊपर चढ़ गया और पढ़ने लगा। लिखा था कि, "नया कलर किया गया है, इसलिए कोई भी इस खंभे को छूना नहीं।"

फोकट, व्यर्थ। आपके हित का मुद्दा हो, करना बहुत जरूरी हो, नहीं करने से निश्चित नुकसान होने वाला हो, और उसे करने पर यदि कोई नुकसान हो जाये, तो बात फिर भी समझ में आती है।

पर जो हित का मुद्दा ना हो, जिसे करना बिल्कुल भी जरूरी ना हो, जिसके नहीं करनी पर कोई भी नुकसान नहीं होने वाला हो, फिर भी उसे करने जाना और भारी नुकसान उठा लेना, उसका नाम है फोकट।

फोकट तद किम लीजिए प्यारे,
शीश भरम की पोट?

भ्रम का पोपला ही पाप का पोटला है। भ्रम का पोटला ही भवभ्रमण का पोटला है। भ्रम का पोटला सच में फोकट है। उसे सर पर चढ़ाने से आत्मा का कोई भी हित नहीं होता।

तत्वज्ञ को कीड़े से लेकर इन्द्र तक के जीवों के सर पर भ्रमणा का पोटला दिखाई देता है। उनकी दौड़, उनका रुख, उनकी दृष्टि, उनका वर्तन इन सभी का मूल उस पोटले में होता है।

सर पर से भ्रमणा के पोटले को उतारने का अर्थ यही कि आपने अपने आपको भवसागर से पार उतार लिया है।

यदि कोई कहे कि, 'यह मेरा बेटा है,' तो इसका शुद्ध आध्यात्मिक अनुवाद होगा कि, 'यह मेरे भ्रम का पोटला है।'

'मेरी पत्नी' इसका शुद्ध आध्यात्मिक अनुवाद है – **'मेरे भ्रम का पोटला'।**

'मेरी संपत्ति' इसका शुद्ध आध्यात्मिक अनुवाद है – **'मेरे भ्रम का पोटला'।**

भ्रम का जीवन, यही संसार का जीवन है। सांसारिक जीवन का एकमात्र आधार भ्रम है। भ्रम ही सांसारिक जीव का जीवन है। संसार का अर्थ इतना ही है – **'भ्रम का पोटला'।**

'फोगट क्यूँ' – इस प्रश्न पर बहुत मनोमंथन करने की जरूरत है। जब मंथन होगा, तब भीतर से जवाब मिलेगा, तब मोक्ष मिलेगा।

(क्रमशः)

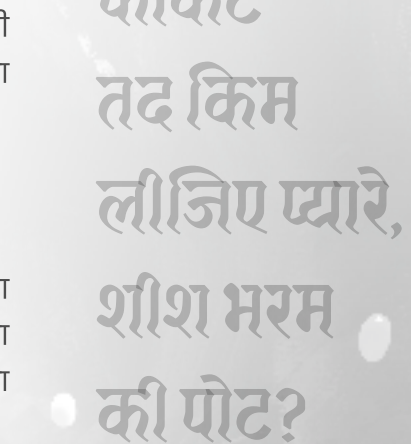

अथ श्री गोडी पार्श्वनाथजी की कथा

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

मेघाशा का महाप्रयाण

सुव्रता के विवाह की शहनाई बज रही थीं, ढोल बज रहे थे। काजलशा ने अत्यन्त धूमधाम से विवाह करवाया। ऐसा आयोजन देखकर स्नेही-स्वजन प्रशंसा करते हुए थक नहीं रहे थे। पुत्री के लिए पिता का प्रेम लोगों को दिखाई दे रहा था।

इस प्रसंग में मेघाशा को भी निकटवर्ती स्नेही के रूप में विशेष अतिथी का सम्मान दिया जा रहा था।

प्रसंग पूर्ण होते ही सभी ने मिष्टान्नादि व्यंजनों का आनन्द लिया और अपने-अपने विश्रामस्थानों पर चले गए। जब मेघाशा ने भी गोडीपुर जाने की बात की, तब "अभी बहुत काम बाकी हैं", ऐसा बहाना निकालकर काजलशा ने मेघाशा को रोक लिया।

सुबह होते ही काजलशा ने अपनी पत्नी मोती से कहा, "सुनो! जब मेघाशा भोजन के लिए बैठ जाए, तो तुझे विष मिश्रित दूध परोसना है।"

पति के मुख से यह वाक्य सुनकर मोती चौंक गई और आघात के साथ पूछा, "अरे! ऐसा क्यों करना चाहते हैं?"

"स्त्री की बुद्धि पैर के नीचे होती है, तुझे तो कुछ समझ में नहीं आएगा। मेरे मार्ग में आने वाला काँटा मुझे दूर करना है। और यह कार्य किये बिना मुझे चैन नहीं आएगा।"

"हे स्वामीनाथ! आप मृगादेवी के लिए भी कुछ विचार नहीं कर रहे? आपको पाप का, दुर्गति का कुछ भी भय नहीं है? मान के लिए भूखा बनकर ईर्ष्याभाव में ऐसा अधम कदम क्यों उठाने जा रहे हैं? मैं ऐसे कार्य में आपकी कभी भी सहायता नहीं करूँगी!"

"अच्छा! तो ऐसा है। तो तू मेरी बात नहीं मानेगी! है ना मोती? अब सुनो...! तुम्हारा पति होने के नाते मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, कि तुझे यह करना ही पड़ेगा!"

अनिच्छा से मोती ने पति की आज्ञा का पालन तो किया, लेकिन मन ही मन में उसने दूसरी योजना भी बना ली। मोती अपने पतिदेव की प्रकृति भली भाँति जानती थी। कोयले जैसे काले-कपटी मन वाले अपने पति को सद्बोध के साबुन से चाहे जितना धो लो, फिर भी उसकी मति उज्ज्वल नहीं होगी।

दोपहर में भोजन का समय होने पर काजलशा ने अपने बहनोई मेघाशा को भोजन के लिए आमंत्रित किया। बाजोट लगाकर काजलशा-मेघाशा पास-पास में खाने के लिए बैठे। पति के कथनानुसार काँपते हुए हाथों से मोती ने मेघाशा को विष-मिश्रित दूध परोसा।

इस महापुण्यवंत प्रभु भक्त की हत्या का पाप मेरे सिर पर न चढ़े, इसलिए उसने मेघाशा को सूचित किया कि, "इस पात्र में विषमिश्रित दूध है, कृपया आप इसका पान मत करें!"

काजलशा ने मोती की ओर आँखें फाड़कर देखा। और फिर मेघाशा के सामने देखकर झूठमूठ हँसते हुए कहा, "ऐसी मजाक सालहज की नहीं होगी, तो किसकी होगी? ऐसी मजाक-मस्ती तो होती ही रहेगी।"

"मैंने दूध की बाधा रखी है, नहीं तो ऐसे अमृतपान को भला कौन छोड़ेगा!"

"आप संकोच न करो! ग्रहण करो! वापरो...वापरो!"

मेघाशा का भी नियम था कि, थाली में परोसा हुआ भोजन जूठा नहीं रखना है। लेकिन दूसरी ओर यक्ष का संकेत भी स्मरण में आया।

मेघाशा ने विचार किया कि, "यक्ष के संकेतानुसार वैसे भी मेरा आयुष्य अल्प है, तो केवल अल्प आयुष्य की चिंता में मैं मेरे व्रत का भंग क्यों करूँ?"

प्राण जाय, पर वचन न जाय।

काजलशा निर्लज्जता के साथ स्मित करते हुए सब कुछ देख रहा था। मेघाशा सब नाटक देख रहे थे, समझ भी रहे थे, फिर भी दूध का पात्र उठाकर नवकार मन्त्र का स्मरण करते हुए विषमिश्रित दूध को पी लिया। काजलशा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह भीतर ही भीतर नाचने लगा।

मेघाशा भोजन स्थान से उठकर विश्रामस्थल पर जाने के लिए निकले। चलते समय उनके पैर डगमगाने लगे, आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। जैसे-तैसे विश्रामकक्ष तक पहुँचे, लेकिन चक्कर आने के कारण पलंग पर गिर गए। शरीर में विष का असर होते ही नसें खिंचने लगीं। सम्पूर्ण शरीर में विष फैलने के कारण काया श्यामवर्णी हो गई, इन्द्रियाँ शून्य हो गईं। अन्ततः मेघाशा के प्राण-पखेरु शरीर के साथ संबंध तोड़कर परमागाम की ओर प्रयाण कर गए।

मीठडिया वोरा गोत्रीय मेघाशा, अपनी पत्नी, बाल-बच्चे, परिवार को छोड़कर, जिनालय का कार्य अधूरा छोड़कर परलोक के मार्ग पर संचार कर गए।

केवल 65 वर्ष की अल्पायु में अर्हद् भक्ति करते हुए, अपने जीवन को सार्थक बनाकर, विशेष भक्ति करने के लिए परभव चले गए।

मृत्यु की गोद में सोये हुए मेघाशा को देखकर काजलशा चुपचाप घर से बाहर चला गया। मानो घर में कुछ हुआ ही नहीं है, जैसे कि उसे कुछ पता ही नहीं है, ऐसे भाव लाकर काजल जैसा श्याम मुख लेकर वह कहीं चला गया।

काजलशा का देशनिकाल

मेघाशा को निश्चेत पड़ा हुआ देखकर काँपती हुई मोती दौड़ते-दौड़ते ननद मृगादेवी के पास गई। आक्रोश, आक्रंदन और रुदन करती हुई, आँखो से निरन्तर बहती जलधारा के साथ उसने मृगादेवी से कहा, "आपके और मेरे भाग फूट गये। आपके भाई को मैंने मना किया, बहुत समझाया, फिर भी ईर्ष्या में अन्ध होकर, हठ पर उतरकर मेरी एक भी न सुनते हुए उसने तुम्हारे पतिदेव को विषमिश्रित दूध पिला दिया।" अब डर कर वह पापात्मा तो घर से भाग गया है, और आपके स्वामी मृतावस्था में पलंग पर पड़े हैं।"

अशुभ समाचार सुनते ही मृगादेवी के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह जोर-जोर से चिल्लाकर आक्रन्द करने लगी। दोनों बच्चे भी आक्रन्द करते हुए जोर-जोर से रोने लगे। सभी दौड़ते-दौड़ते मेघाशा के कक्ष में पहुँचे। पतिदेव की प्राणरहित देह को देखकर मृगादेवी मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी। हृदय को प्रताडित करने वाला बच्चों का आक्रन्द सुनकर आस-पड़ोस की स्त्रियाँ दौड़ती हुई आईं। मृगादेवी के मुख पर जल छिड़ककर उसे सभान किया गया। अपने प्राणेश्वर का मृतदेह देखकर वह अतिशय कल्पान्त करने लगी।

लोग काजलशा को ढूँढने के लिए गाँव में निकल पड़े, और देखते ही देखते काजलशा को पकड़कर ले आए। पापी भाई को देखते ही बहन का गुस्सा छठे आसमान पर पहुँच गया।

"तू मेरा भाई कहलाने के लायक ही नहीं है। क्या तुम्हें हमारी प्रगति चुभ रही थी? क्या तुम्हारे पास जमीन-जायदाद, किसी चीज में हमने भाग माँगा था? तुम्हारी बहन विधवा हो जाएगी और तुम्हारे भांजे अनाथ हो जाएँगे, इसकी भी तुम्हें चिन्ता नहीं हुई? ऐसे विचार भी तुम्हारे मन में कैसे आए? तू इतना अन्धा कैसे हो गया? जिनालय का कार्य अधूरा है, और मेरे निरपराधी पतिदेव को तूने विष देकर मार ड़ाला! धिक्कार हो तुझे!"

मुँह नीचा करके काजलशा सब सुन रहा था। उसे मन ही मन बहुत अफसोस हो रहा था, गलती का पछतावा हो रहा था। लेकिन, तुरीण से निकला तीर वापिस नहीं आता। सभी लोग काजलशा को धिक्कारने लगे।

सभी लोगों ने साथ मिलकर मेघाशा की सम्मान-पूर्वक अन्तिम क्रिया की। काजलशा अपनी बहन के चरणों में गिर पड़ा और अश्रुप्रवाह के साथ पश्चात्ताप करते हुए हृदय से उससे क्षमा माँगने लगा और अपने घर में रहने के लिए उससे विनती करने लगा।

बहन मृगादेवी ने कहा, "भाई! मुझे तुम्हारे विषैले धन से कोई प्रयोजन नहीं है। प्रभु गोडीजी पार्श्व-नाथ के प्रभाव से तथा यक्ष की सहायता से हमारे पास सब कुछ है। मुझे शीघ्रातिशीघ्र जिना-लय

के शिखर का कार्य पूर्ण करना है। भाई! मैं तुम्हारा अपराध मन में नहीं रखूँगी। हमारे ही पूर्वभव के कर्मों के कारण तुम्हें ऐसे दुर्बुद्धि सूझी होगी।"

देवीस्वरूप मृगादेवी का ऐसा उदार स्वरूप देखकर, उसकी ऐसी बातें सुनकर काजलशा लज्जा से उसके चरणों में नतमस्तक हो गया।

सुबह होते ही पारकर देश के नरेश परमार सोढा महाराज खेंगारजी की ओर से काजलशा के लिए बुलावा आया। राजा की आज्ञा होते ही काजलशा दरबार में उपस्थित हुआ। राजा पहले से ही आक्रोश में हैं, यह देखकर काजलशा ने मौन धारण किया।

"अरे अधम! तुमने केवल तुम्हारे कुल को ही नहीं, बल्कि मेरे राज्य को भी कलंकित कर दिया। एक धर्मात्मा की हत्या करके तुमने बहुत बड़ा अपराध किया है। तुम्हारे जैसे को तो तुरन्त के तुरन्त यमलोक पहुँचाना ही हमारा कर्तव्य है। परन्तु मृगादेवी और उनके बच्चों की चिन्ता से तुम्हें जीवित छोड़ता हूँ। और सुनो! मुझे तुम्हारे जैसे दरबारी की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। अब से तुम मेरे राज्य की सीमा में कभी भी दिखाई मत देना! यदि कहीं से भी तुम्हारी खबर मिली, तो मैं तुम्हें जीवित नहीं छोड़ूँगा!"

अपमानित हुआ काजलशा अपने घर वापस लौटा और बहन मृगादेवी से बोला, "मुझे मेरे अपकृत्यों का फल मिल चुका है। अब हम गोडीपुर चलते हैं। मैं भी मेरे परिवार सहित आ रहा हूँ। मैं वहाँ पर जिनालय के काम की देख-रेख करूँगा, कार्यपूर्ति के लिए प्रयत्न करूँगा।"

विशाल एवं उदार हृदयी मृगादेवी ने भाई की बात स्वीकार की, और भूदेशर के घर-संसार को समेटकर सभी गोडीपुर पहुँचे।

(क्रमशः)

ज्ञान कैसे मिलेगा?

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Hello friends,

मानो या ना मानो, आप सभी बालकों को चाहिए कि आप मुझे दिल से धन्यवाद दें। क्योंकि आप जब छोटे थे, तब आपको किसी ने साइकिल चलाना सिखाया था, जब आपको चलाना आ गया तो आपने उनको बोला था – **शुक्रिया।**

जब आप पढ़ते थे, और आप से कोई हार्ड सम सॉल्व नहीं हो रहा था, तब आप के किसी मित्र ने आपको वह थियरी समझाई और आपने उसे कहा था – **धन्यवाद।**

आप बड़े हुए, किसी ने आपको धंधे की टिप्स समझाई, आपने उससे भी कहा – **थैंक यू सो मच।** परंतु हमने तो यहाँ आपको वह सिखाया जो आपको साक्षात् भगवान ही बना दे। हमारे बताए हुए रास्ते पर यदि आप चलो तो आप स्वयं भगवान बन जाओगे। **अभी बताइए आपको हमें शुक्रिया बोलना चाहिए या नहीं?**

अभी हमने आपको यह सब बताया, आपने सुना और आपका ज्ञान बढ़ा। आपने कुछ ऐसा ज्ञान पाया जिसे अमल में लाने से आप अपना भला कर सकते हैं। खुद की भलाई की बात हमने आपको बताई। पर सिर्फ हमारे या किसी के बताने मात्र से किसी का कल्याण नहीं हो पाता। पहले नंबर की बात यह है कि उसको सुनना पड़ता है, फिर मानना पड़ता है और फिर अपनाना पड़ता है।

सुनना यानी सम्यग्ज्ञान, मानना यानी सम्यग्दर्शन और अपनाना यानी सम्यग्चारित्र। सम्यग् ज्ञान-दर्शन-चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है।

भगवान महावीर स्वामी जी के शिष्य गणधर सुधर्मा स्वामी जी अपने शिष्य जंबू स्वामी जी को बताते हैं, **'सुअं मे आउसं! तेणं भगवया एव-मक्खायं'** अर्थात, हे आयुष्यमान जंबू! मैंने सुना है, उस भगवान महावीर स्वामी ने ऐसा कहा है...

आज हम जो कुछ भी आपको बताते हैं, वह सभी भगवान महावीर के पास गणधरों ने सुना, उनसे उनके शिष्यों ने सुना, उनसे हमारे पूर्वजों ने सुना, और उनसे हमने सुना। और आज हमसे आपने सुना, इस प्रकार 'सुनने' की परंपरा चली।

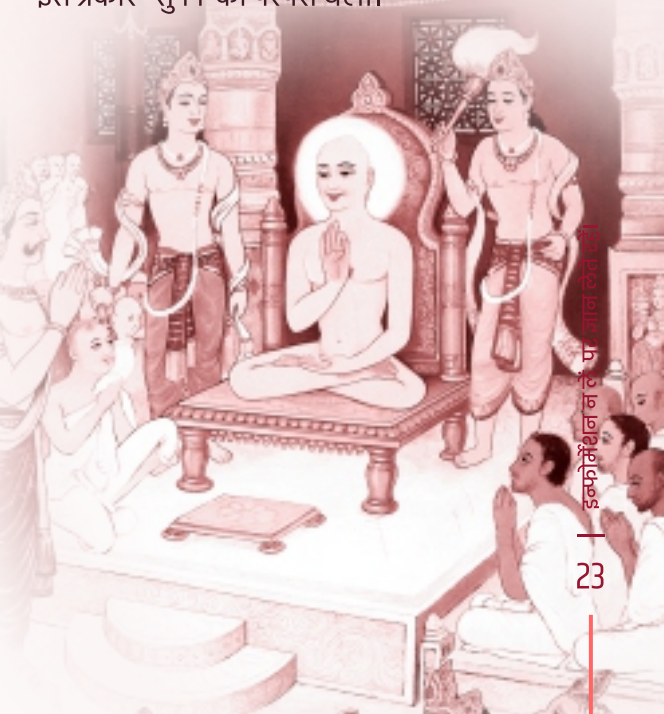

सुनना, इसे संस्कृत में **'श्रुत'** कहते हैं। सबसे महानतम व्यवसाय है, सुनना। सुनते-सुनते ही इंसान भगवान बन सकता है। परंतु मुझे कहने दीजिए कि, आज के जमाने में कोई भी, किसी का भी, कुछ भी, सुनने को ही राजी नहीं है।

सभी को एक दूसरे को कुछ ना कुछ सुनाना है, जताना है, बता देना है, सिखा देना है, दिखा देना है; पर किसी को किसी का कुछ भी सुनना नहीं है।

भगवान कितनों का सुनते हैं, सभी का तो सुनते हैं। जो सभी जीवों का सुनता है वह भगवान से कम नहीं।

चाहे किसी और का न सुने, गैरों का, औरों का न सुने, परंतु जो हमारे बड़े हैं, हमारे हितैषी हैं, हमारी उन्नति में जिनको आनंद है, हमारे मित्र हैं, माँ-बाप हैं, गुरु हैं, शिक्षक हैं, अगर इनका भी नहीं सुनोगे तो क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसका ज्ञान कैसे मिलेगा?

एक छोटा सा प्रसंग याद आ रहा है, एक महाराज साहब जी को एक गुरु महाराज ने बहुत खरा-खोटा सुना दिया। उन महाराज जी का वास्तव में दोष नहीं था, यहाँ तक कि उनको तो पता भी नहीं था कि मामला क्या है, फिर भी उन्होंने नतमस्तक होकर सुन लिया।

शाम ढली, और साथी मुनिवर ने आकर कहा, "महाराज श्री! आपने बिना गलती के सब सुन क्यों लिया? ऐसा अन्याय नहीं चलता, दोष किसी का और सुनना आपको पड़ा!"

मुनिश्री ने मुस्कराकर कहा, बहुत बार हमने गलती की थी लेकिन किसी ने नहीं सुनाया था। आज गलती नहीं की, फिर भी सुनना पड़ा, तो हिसाब बराबर हो गया। सुनने से डरना नहीं चाहिए, जितना सुनोगे उतना सीखोगे, उतना ही लिखोगे और जिंदगी में आगे बढ़ोगे। तो आगे बढ़ना है तो 'श्रुत' की, 'सुनने' की आराधना करो।"

और वाकई में वे महाराजश्री आगे बढ़े, 600 साधुओं के गुरु बने। वे थे स्वनामधन्य गच्छाधिपति श्री जयघोषसूरीश्वरजी महाराजा। सुनने से इस भव में महान बनिए, और अगले भव में भगवान।

॥ श्रुत पद ॥

(ना कजरे की...)

मन बेसहारा है, श्रुत से ही सहारा है;
जीवन की थमी है डोर, श्रुत से ही उजियारा है.

केवलज्ञानी खुद भी तो, श्रुत का आदर करते हैं;
जिसके जरिये भी हम को, वे ज्ञानदान करते हैं;
श्रुत है तो जिंदगी है, श्रुत बिन जीना दुश्वार ॥1॥

जब केवलज्ञान का सूरज, ना हो तब श्रुत दिया है;
जीवन की हर मुश्किल को, श्रुत ने आसान किया है;
मेरा मकसद श्रुत की पूजा, श्रुत दो जन्मों का सार... ॥2॥

चुटकी भर में नामुमकिन को, ये मुमकिन करता है;
जो उसकी राह पर चलता, वो न किसी से डरता है;
बहती हवा भीगी जमीं, श्रुत ज्ञान का करें बयान... ॥3॥

A Mind Peace is Heaven

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक स्त्री अत्यंत क्रोधी स्वभाव वाली थी। दिन और रात, घर में और बाहर हर जगह गुस्सा करती थी। अपनी सास पर, ससुर पर, पति पर, बच्चों पर, नौकरों पर गुस्सा करती थी। उसे भी मालूम था कि, मैं जो कर रही हूँ वह योग्य नहीं है। पर अपने ही गुस्सैल स्वभाव पर उसका नियंत्रण नहीं था।

एक दिन उस शहर में एक संत पुरुष पधारे। वह उनसे मिलने गई, और कहा, "महात्मा! मुझे बहुत गुस्सा आता है, आप कोई उपाय बताइए।"

संत ने कहा, "मेरे पास क्रोध की एक औषधि है, जो कि एक क्रोध मारक पत्थर है।"

उस स्त्री ने पूछा, "क्या वह पत्थर खाना है? या किसी को मारना है? घिसना है? या तोड़ना है?"

संत ने हंसते हुए कहा, "उसे खाना भी नहीं है, मारना भी नहीं है, घिसना भी नहीं है, और तोड़ना भी नहीं है। बस, जब भी क्रोध आ जाए, तब उसे मुँह में रखना है। उस समय होंठ नहीं खोलने हैं। बस, इतना करो, तो यह दवाई असर दिखाएगी।"

वह स्त्री जानती थी कि, क्रोध अच्छा नहीं है। इस-लिए उसने कहा, "महात्मन! यह पत्थर मुझे दे दीजिए।"

महात्मा ने उसे एक छोटा शालिग्राम दे दिया। वह श्रद्धा से उसे ले गई। क्रोध तो उसका स्वभाव बना हुआ ही था। पर अब उसे जब भी क्रोध आता था, तब वह पत्थर मुँह में रखकर अपना मुँह बंद कर देती थी। पति, पुत्र या नौकर पर क्रोध करने से पहले याद करके पत्थर मुँह में रखकर, मुँह बंद कर देती थी। अब होठ खुलेंगे ही नहीं, तो बोलेगी कैसे? जब बोलेगी ही नहीं तो बात आगे कैसे

बढ़ेगी? अंदर से तो बहुत क्रोध आता था, पर होठ नहीं खोलने थे। दो-तीन महीने में अभ्यास हो गया। क्रोध शांत हो गया। उसे लगा कि वह अब ठीक हो गई है।

वह संत के पास गई और बोली, "महात्मन! आपने तो मुझ पर कृपा कर दी। बहुत अच्छी दवाई दी। यह सुनकर महात्मा हंस पड़े और रहस्य खोल दिया।"

आखिर में उस संत पुरुष ने उस स्त्री को हितशिक्षा देते हुए कहा कि, "बहन! **क्रोध धर्म से भ्रष्ट तो करता ही है, पर धन से भी भ्रष्ट करता है। क्रोध सज्जनों से तो दूर करता ही है, बेटों से भी दूर कर देता है। क्रोध मन को तो बिगाड़ता ही है, तन को भी बिगाड़ देता है। क्रोध परलोक को तो बिगाड़ता ही है, पर आलोक भी बिगाड़ देता है। इसलिए जीवन में से क्रोध को तिलांजली देनी ही चाहिए!!!"**

संत पुरुष ने आगे कहा, "बहन! हमारी 'हस्ती' को इतनी 'सस्ती' नहीं बनानी चाहिए कि कोई भी आकर उसकी 'मस्ती' कर जाए।"

एक विदेशी कहावत है-

"A mind piece is hell &
A mind peace is heaven."

स्वर्ग के सुख का अनुभव करने के लिए, मरकर स्वर्ग में जाने की जरूरत नहीं है। आप अपने स्वभाव को शांत बना दीजिए, स्वर्ग यहीं ही है।

तो चलिए, हम संकल्प करते हैं कि,
'आज मुझे क्रोध करना ही नहीं है।
और यदि क्रोध आ जाए तो,
जिस पर क्रोध किया हो
उसे ₹10 गिफ्ट कर देंगे।'

A
MIND PIECE
is
HELL
&
A
MIND PEACE
is
HEAVEN

Temper : A Terror – 17

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

शहद के छत्ते से गिर रहे शहद की तरह राजा की आँखों से अश्रु टपक रहे थे। अपने विचक्षण मंत्री-मित्र मित्रानंद की दयनीय स्थिति सद्गुरु के मुख से सुनकर राजा का दिल बिल्कुल बैठ गया था। इतने गहरे शोक को अमरदत्त राजा पहली बार अनुभव कर रहे थे। उनको व्यंतर का कथन याद आ गया, और उनके हृदय में क्रोध, करुणा और कर्म की विचित्रताओ की तरंगें उठने लगीं।

"क्यों भाई! क्यों?" सभी नगरजन राजा की अवस्था देखकर और मंत्री की दशा सुनकर निःशब्द रह गए थे।

रानी को भी इस करुण कथा को सुनकर गहरा आघात लगा था। उसके मुँह से अविरत शब्द निकल रहे थे, "हे देवर जी!... हे देवर जी!... यह क्या हुआ?"

"यदाऽहं भवताऽऽनीता, नदाऽनेके विनिर्मिताः।
उपायाः स्वविपत्तौ, ते क्व गता हा महामते! ।।

"हे महामती! तेरे द्वारा जब मैं लाई गई थी, तब अनेक उपाय किए थे, वे सब उपाय तेरी आपत्तियों के समय कहाँ गए?" इतना कहकर गला रुंध जाए, उतने जोर से रानी रत्नमंजरी रोने लगी। अपने देवर मित्रानंद का वियोग उसे कांटे की तरह चुभने लगा।

चारों तरफ विलाप और विषादमय वातावरण छा गया। प्रजाजनों के दिल भी बोझिल हो गए। धर्म-सभा, शोकसभा बन गई।

"शोकोऽवश्यं परित्याज्यो, राजन! धर्मोद्यमं कुरु।
येनेदृशानां दुः खानां, भाजनं नोपजायते ।।"

श्लोक का गंभीर स्वर सद्गुरु के मुखकमल से राजा-रानी को सुनाई दिया। सिसकने की आवाज धीमी हो गई।

"राजन्! जो बीत गया, सो बीत गया। शोक ऐसी

वस्तु है, जो व्यक्ति का सर्वनाश कर देती है, इस-लिए यह अवश्य ही त्याज्य है।

शोक तो सभी को होता है, पर उसे दूर करने वाले कोई विरल ही होते हैं। राजन! धर्म में प्रयत्न करो, क्योंकि धर्म ही शोक को पिघला सकता है। शोक तब होता है, जब पुण्य कम हो, और धर्म करने से हम ऐसे दु:खों का स्थान प्राप्त नहीं करते; क्योंकि धर्म परलोक में शाश्वत सुख, और इस लोक में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख देता है राजन!" जादू भरी मीठी बातो की राजा पर असर हुई। राजा थोड़े स्वस्थ बने। रानी सर झुकाए नीचे बैठी हुई थी। उसकी आँखें नम थीं। सद्गुरु को ऐसा लगा कि उसके मन में कोई मनोमंथन चल रहा हो।

"किंतु सद्गुरु!" राजा ने दबी आवाज से कहा। "मेरे मित्र का जीव कौन सी गति में उत्पन्न हुआ है? वह अभी कहाँ है?" सभी के मन में घूम रहे प्रश्नों को राजा ने शब्दाकार दिया। इन प्रश्नों की तैयारी पहले से ही सद्गुरु के मन में थी, इसलिए उनके चेहरे पर धीमी मुस्कान फैल गई।

"वह और कहीं पर भी नहीं, आपके यहाँ वारिस के रूप में उत्पन्न हुआ है।"

रानी यह बात सुनकर चकित हो गई। उसने अपने पेट को हाथों से सहलाया।

चारों और बसंत जैसी बहार दृष्टिगोचर हो रही थी। यह देश अपने धान्य के लिए अति प्रसिद्ध था। ऐसा कहा जाता था कि, जो व्यक्ति इस देश का अन्न खाएगा, उसे कभी भी वैध की औषधि खाने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

धान्यो के साथ होने वाली घास भी चार-पांच हाथ जितना बढ़ गई थी। और इसी कारण से खेतों में पशुओं और चोरों के द्वारा धान्य की चोरी की घटनाएं कर्णपटल को सतेज कर रही थी।

"ऐ... ऐ... चोर... चोर..." खेत में काम करने वाला एक अधेड़ वय का कर्मचारी जोर-जोर से चीख मारने लगा।

"क्या हुआ भाई चंद्रसेन! इतना क्यों चिल्ला रहे हो?" खेत के मालिक ने अपने कर्मचारी से पूछा।

"क्षेमंकर साहेब! साहेब! उस यात्री को देखिए... निकट वाले के खेत के धान्य को मन चाहे उस तरह से तोड़-तोड़कर अपने पिटारे जैसे पेट को भरने की हल्की चेष्टा कर रहा है, ऐ... य! चोर!" चंद्रसेन अपने मालिक के सामने फिर से जोर से चिल्लाया।

पथिक थोड़ा घबरा गया हो उस तरह से चंद्रसेन और क्षेमंकर की ओर देखने लगा। जिस तरह

घबराई हुई गाय के ऊपर बाघिन टूट पड़ती है, उसी ही तरह से चंद्रसेन भी शब्दों के बाण से धान्य तोड़ रहे उस पथिक पर टूट पड़ा।

"क्या तेरे बाप का खेत है...? किसको पूछ कर तू यह लूटपाट कर रहा है...? तेरे जैसे चोर को तो...!!" चंद्रसेन के होठ क्रोध से कांपने लगे, "इस महाचोर को तो फांसी पर लटका देना चाहिए..."

उसके गुस्से को देख कर 'मुझे मार डालेगा...?' ऐसी आशंका से रास्ते से जाने वाला यात्री वहाँ से भागा।

नरक की यातना को भी भुला दे, ऐसी तपिश में सास बैठी हुई थी।

सामने एक नवयुवती कन्या, जिसके हाथ मेहंदी से रंगे हुए थे, भोजन कर रही थी। बहुत ही प्यार से सास अपने पुत्र की पत्नी को, अपनी पुत्रवधू को खाना खिला रही थी।

गाँव में ऐसी कहावत थी कि 'जोड़ी हो तो सत्यश्री और लक्ष्मी की।' ये सास-बहू अपने प्रेम के लिए जग प्रसिद्ध थे। वास्तव में सत्यश्री सास होने पर भी लक्ष्मी को अपनी बेटी से भी ज्यादा मानती थी। यह सच में उसे 'लक्ष्मी' मानती थी।

अचानक लगातार खांसने की आवाज सास सत्यश्री को सुनाई दी। उसकी दृष्टि अपनी पुत्रवधू की ओर गई। उसने देखा कि एक साथ शीघ्रता से बहुत बड़े कवल खाने से श्वास नाड़ी में घुटन होने के कारण पुत्रवधू खांस रही थी।

अपने पल्लू से सर पर जमे हुए पसीने को पौंछकर सत्यश्री खड़ी हो गई। लक्ष्मी के पास आकर उसकी पीठ को सत्यश्री अपने हाथ से सहलाने लगी।

"कितनी बार कहा है कि भोजन करना सीख..., छोटे-छोटे कवल लेने चाहिए ना! क्यूँ डायन की तरह बड़े-बड़े कवलों से भोजन करती है? फिर गले में घुटन नहीं होगी तो और क्या होगा?" लक्ष्मी को सासु माँ की आवाज में थोड़ा क्रोध अनुभव हुआ। लक्ष्मी ने सास की तरफ देखा।

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
90820 78796 | 92704 56160